YEAR-2004

Gold Trophy (I –Prize)

कालका–शिमला हिल रेलवे शताब्दी

जनसाधारण तथा प्रमुख उद्योग के लिए परिवहन के प्रधान साधन के रूप में रेलवे की राष्ट्रीय जनजीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। कालका शिमला हिल रेलवे ने वर्ष 1903 में इस शीत–स्वर्ग की ओर अपनी पहली यात्रा शुरू की थी तथा 2003 में इसने एक सौ वर्ष पूरे कर लिए हैं तथा अपनी शताब्दी मना रही है। अत्यधिक सुंदर पर्वतीय स्थलों में से एक शिमला को मैदानों से जोड़ने वाली यह रेल सेवा लाखों यात्रियों के लिए एक नए अनुभव तथा प्रसन्नता का स्रोत है।

रेल मंत्रालय की झांकी में राष्ट्र की सेवा में समर्पित भारतीय रेल का चित्रण किया गया है। झांकी के अग्र भाग में भारतीय रेल के वाष्प इंजन को बड़ोग सुरंग से बाहर आता दिखाया गया है। प्रथम ट्रेलर में चापाकार कंडाघाट पुल पर पृष्ठभूमि के साथ रेल कार को दिखाया गया है। दूसरे ट्रेलर में, शिवालिक एक्सप्रेस को सर्दियों के बर्फीले मौसम में शिमला रेलवे स्टेशन से रवाना होते दिखाया गया है।

KALKA-SHIMLA HILL RAILWAYS – CENTENARY

As a principal mode of transport for the common man and core industry, Railways play a significant role in the life of the nation. Kalka-Shimla Hill Railway, starting its journey to a cooler paradise in 1903 has completed one hundred years in 2003 and is celebrating its Centenary. This train service connecting Shimla, one of the most beautiful hill stations with the plains, is a source of novel experience and happiness to millions of passengers.

The tableau of Ministry of Railways depicts Indian Railways in the service of nation. On the tractor, Indian Railways shows a steam engine coming out of Barog Tunnel. In the first trailer, a Rail Car is shown on arched Kandaghat Bridge with landscape. In the second trailer, Shivalik Express is seen leaving Shimla railway station in winter snow.